International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर्यावरण और समकालीन हिंदी कविता

डा. सुमन पलासिया
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मा.ला.व.राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा(राजस्थान)

शोध सार

विकास की प्रक्रिया में मानव ने प्रकृति का अनावश्यक दोहन किया है जिससे पर्यावरण के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया है. जल, जंगल, जमीन के साथ वायुमंडल में व्याप्त हवा को भी मानव ने सुरक्षित और प्राकृतिक नहीं रहने दिया है. प्रकृति के प्रति मानव की इस अनावश्यक दोहन की प्रक्रिया से उपजे संकटों को कवियों ने अपनी कविता में स्थान दिया है. समकालीन कवि न सिर्फ जल, जंगल, जमीन, वायुमंडल की चिन्ता करते हैं बल्कि वे अपनी कविताओं में पेड़–पौधों, पशुओं और चिड़ियाओं को भी स्थान देते है. समकालीन कविता पर्यावरण के प्रति मानव की चिन्ता को बखूबी पकट करती है.

बीज शब्द

पर्यावरण, पर्यावरण प्रदुषण, पर्यावरण संरक्षण, चेतना, समकालीन हिन्दी कविता

मूल आलेख

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हम सम्पूर्ण विश्व में हुए वैज्ञानिक विकास की अभूतपूर्व उपलब्धियों पर गर्व कर सकते है. नवीन तकनीक और दूरसंचार क्रान्ति न इस सदी में मानव जीवन को और अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बना दिया है.विज्ञान के कारण मानव का जीवन तो बेहतर हुआ है पर विकास की प्रक्रिया में पर्यावरण में उसका अनाधिकृत हस्तक्षेप भी बढ़ा है. इस कालखंड़ में भौतिक उत्पादनों के निर्माण में लगे कारखानों द्वारा होता पर्यावरण प्रदूषण स्थानीय नहीं बल्कि विश्वव्यापी घटना है. विकास की इस अंधी दौड में अगर किसी को नुकसान पहुंचा है तो वह या तो इस पृथ्वी के मूल प्राकृतिक संसाधन है जो समाप्ति की ओर अग्रसर है या इस पृथ्वी का पर्यावरण है जो अपना मौलिक स्वरूप खोन के कगार पर है.

साहित्य और समाज का अभिन्न सम्बन्ध है. जहाँ साहित्य अपने समय का आकलन करता है वहीं समकालीनता वर्तमान के जीवन संदर्भों से जुड़ने पर आती है. समकालीनता एकजीवन दृष्टि है. समकालीन साहित्य अपने समय की सभ्यता को समझने का एक सशक्त माध्यम होता है. समकालीन कविता का फलक इतना विराट और विशाल है कि वह मानवीय जीवन को एकायामी नहीं बहुआयामी अर्थों में अंकित करती है. आज जब सभ्यता पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न पहलुओं और कारणों से जूझ रही है, ऐसे में समकालीन हिंदी कविता इन्हें अपनी भाषा में दर्ज करती हैं.समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर भी गंभीर चिन्तन दिखाई देता है.

समकालीन कवि पर्यावरण को लेकर चिंतित है,वह औद्योगिक विकास के कारण प्राकृतिक दुनिया को मानव द्वारा नष्ट होते हुए चुपचाप नहीं देख सकता. कवि मानव की मूलभूत आवश्यकताओं को जानता है और अच्छी तरह से समझता है कि मानव प्रकृति के उपयोग के बिना जीवित नहीं रह पायेगा. कवि यह भी जानता है कि अपनी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का असीमित दोहन कर उसे विलुप्त होने के कगार पर पहुँचा दिया है. उपभोक्तावादीप्रवृति के कारण आज मनुष्य ने वन, भूमि,पृथ्वी, आकाश को मात्र मानवीय उपभोग की वस्तु बना दिया है. मानव ने पर्यावरण को इतना प्रदूषित कर दिया है कि जल, वायु,भूमि, आकाश जो मानव के जीवनदायिनी तत्त्व है,वे सब विषैले हो गये है. जंगल समाप्त होने को हैं, जानवर विलुप्त हो रहे हैं, हवा में जहरघुल गया है, पानी पीने लायक नहीं रहा है. आज प्रकृति को देखने का समकालीनकवि का नजरिया बदल गयाहै क्योंकि परिवेश बदला है और परिवेश के बदलने से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रकृति भी बदली है. जिस परिवेश में कवि जीता है उस परिवेश के संवेदनात्मक अनुभवों को अपनी कविता में अभिव्यक्त करके उस समय की वास्तविकता को उजागर करने का कार्य करता है.

जैव विविधता निःशेषण के इस घोर संकट से हिन्दी कविता भी अनभिज्ञ नहीं है. समकालीन कवियों की कविताएँ न सिर्फ पर्यावरण के सौन्दर्य, उसकी विविधता को दिखाती है, अपितु पर्यावरणीय समस्याओं का अधिक समग्रता के साथ चित्रित करती हैं. पर्यावरण के प्रदुषण के कारण विलुप्त होते प्राकृतिक संसाधनों, दषित होती हवा, गंदे होते पानी, खोदे जाते पहाड़ों, विलुप्त होते प्राणियों, काटे जाते पेड़ों, को समकालीन कवियों ने अपनी कविता में स्थान देकर अपनी चिन्ता को प्रकट किया है.

प्रकृति के साथ छेड़छाड़ से शहरों में रहने वाला सभ्य मानव बाद में प्रभावित होता है पर सबसे पहले वह प्रभावित होता है जो प्रकृति के ज्यादा निकट है. साहित्यकार हरिराम मीणा लिखते हैं कि–'प्रकृति के साथ बेरहम छेड़खानी केवल आदिवासी के अस्तित्व का संकट नहीं है बल्कि संपूर्ण मानवता व मानवेत्तर प्राणी जगत के लिए खतरा है. पर्यावरण प्रेमियों के साथ आदिवासी कविता सुर मिलाती है'.[प] कवि मानता है कि जल जंगल और जमीन पर सबसे पहला हक उसका है जो वहाँ के प्राकृतिक परिवेश में निवास करते हैं. जो वहाँ के आदिम निवासी है. जो आदिवासी है. इन भावों को कवि विनोदकुमार शुक्ल अपनी कविता में उकेरते है.

'जो प्रकृति के सबसे निकट हैं
जंगल उनका है
आदिवासी जंगल के सबसे निकट हैं
इसलिए जंगल उन्हीं का है
अब उनके बेदखल होने का समय है
यह वही समय है
जब आकाश से पहले
एक तारा बेदखल होगा
जब एक पेड़ से
पक्षी बेदखल होगा
आकाश से चाँदनी
बेदखल होगी
जब जंगल से
आदिवासी बेदखल होंगे।
जब कविता से
एक एक शब्द बेदखल होंगे'[पप]

प्रत्येक मनुष्य को अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग किया जाना चाहिए. आवश्यकता से अधिक उपभोग करने की प्रवृत्ति ही प्रकृति के विनाश का सबसे बड़ा करण होता है. कवि नरेश अग्रवाल तो वृक्षों के काटे जाने को व्यक्ति के अंतिम संस्कार की तरह ही मानते हैं इसलिए अपनी कविता में लिखते हैं कि

'मैं गुजर रहा था
अपने चिरपरिचित मैदान से
एकाएक चीख सुनी
ये मेरे प्रिय पेड़ की थी
कुछ लोग खड़े थे
कड़ी–बड़ी कुल्हाड़ियाँ लिए
वे काट चुके थे उसके हाथ
अब पाँव भी काटने वाले थे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हम लोग लाश उठा रहे हैं
अंतिम संस्कार भी करा देंगें
तुम राख ले जाना'[पपप]

इस प्रकार से आज के दौर की कविता जंगल और पेड़ों के काटे जाने की चिन्ता करने के साथ साथ पर्यावरण के प्रदूषण के कारणों पर भी बात करती है. कवि समझता है कि पेड़–पौधों में भी मानव की तरह ही प्राण होते है. इसलिए वह एक कटते हुए पेड़ के लिए भी चिन्ता करता है

पर्यावरण में हो रहे प्रदुषण से भी कवि चितिंत है. उसे लगता है कि नदियों में हो रहे पर्यावरण प्रदुषण के कारण जीवन कितना कठिन हो जाने वाला है. स्नेहमयी चौधरी अपनी कविता 'उल्टी प्रार्थना' में प्रदूषण की चिन्ता करते हुए लिखती है कि

'आकाश को युद्धभुमि में कल्पित करते ही
चांदनी पीली होने लगी
चाँद उदास और निरीह मानो कह रहा हो
मुझे बचा लो
मुझे बचा लो
पेड़ पौधों की तरह मुझे मत छेड़ो
गंगा, यमुना, गोदावरी आदि पवित्र नदियों के जल की तरह
मुझे प्रदूषित मत करो
सूक्ष्म प्राणदायी जल की तरह मुझे विषाक्त मत करो'[पअ]

ऐसा भी नहीं है कि कवि नहीं समझ रहा हो कि पर्यावरण का यह प्रदूषण किन कारकों की देन है या किन को प्रभावित करता है. कवि रामदरश मिश्र पर्यावरण प्रदूषण से होने वाले प्रभावों को अपनी कविता में ऐसे स्थान देते हैं

'ओह कैसी हवा चल रही है आजकल
कि अमराई के सारे बौर
देखते देखते झुलस जाते हैं
बच्चे पैदा होते हैं विकलांग हो जाते हैं
अन्न खाने से पहले ही अपच करने लगता है
नदियाँ अपना जल लिए दिये खुद प्यासी रह जाती है
बादल आकर बिना बरसे जल लिये लौट जाते हैं'[अ]

कवि जानता है कि जंगल कटेगा तो जंगल के साथ और क्या–क्या समाप्त हो जायेगा. वह समझता है कि प्राणी और पादप किस प्रकार से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं. इसलिए उसकी जंगलो के प्रति चिन्ता पेड़ पौधों के प्रति चिन्ता ही है. कवि राजेन्द्र नागदेव इसे यूँ समझाते हैं

'कल वृक्ष का टुकडों में कटा शरीर गाडियों में चढेगा
चला जायेगा दूर किसी मशीन के अन्दर
कल के बाद किसके कंधो पर दौडेंगी गिलहरियाँ ?
यह प्रश्न धरती जितना बडा है
गिलहरी बराबर छोटा नहीं'[अप]

इसी बात को निर्मला पुत्तुल अपनी 'बाघ' कविता में इस प्रकार से प्रकट करती है.

'बाघ इन दिनों खबरों की सुर्खियों में हैं

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चर्चा है कि बाघों की संख्या कम होती जा रही है
अब जंगल कटने से
बाघ कम होते जा रहे हैं
या आदमी के बढ़ते आतंक से
बाघ थे तो जंगल सुरक्षित था
अब बाघ नहीं रहा तो जंगल असुरक्षित हो गया'[अपप]

प्रकृति अमूल्य है. एक बार प्रकृति को समाप्त करने के बाद शेश कुछ भी नहीं रहने वाला है. कवि जानता है कि प्रकृति नष्ट हो गई तो पृथ्वी पर मानव भी नहीं बचने वाला है इसलिए ग्रेस कुजूर की कविता में तो साफ चेतावनी है कि प्रकृति के समाप्त हो जाने पर मानवता ही नहीं बचेगी और यह समाप्त हो गई तो प्रकृति के सवालों का जवाब देने वाला भी कोई नहीं बचेगा.

'इसलिए फिर कहता हूँ
न छेड़ो प्रकृति को
अन्यथा यह प्रकृति
एक दिन मांगेगी हमसे
तुमसे अपनी तरूणाई का हिसाब
एक एक क्षण और करेगी
भयंकर बगावत और तब
ना तुम होगें
ना हम होंगें'[अपपप]

कवि जानता है कि प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली किसी भी धरोहर का कितना मूल्य है. अशोक सिंह ने अपनी कविता 'संताल परगना का दुःख' में एक प्रकार से प्रकृति के प्रति अपनी सारी चिन्तायें और दुःख उडेल दिये हैं

'संताल परगना दुःखी है
कि यहाँ के जगल उजड़ते जा रहे हैं
गायब होते जा रहे हैं पहाड़
निरंतर कम पड़ते जा रहे हैं उसके खेत
बिलाते जा रहे हैं नदी, तालाब,
जारिया धीरे–धीरे न जाने कहाँ ?
यहाँ तक कि जंगल तो जंगल
गाय, बैल, बकरी, सूअर जैसे पालतू जानवर भी
घटते जा रहे हैं लगातार.....'[पग]

पर्यावरण के प्रदूषण के कारण अब हवा कौनसी शुद्ध रह गई है. हवाओं में जहर घुल गया है. आदमी को सांस लेने में पेशानी होती है. वह समझता है कि जिन्दा रहने के लिए साफ हवा का होना कितना आवश्यक है. कवि मंगलेश डबराल अपनी कविता में शुद्ध हवा की चिन्ता करते हुए लिखते हैं कि

'बढ़ रहे है नाइट्रोजन, सल्फर, कार्बन के आक्साइड
और हवा में झूलते हुए चमकदार और खतरनाक कण
ऐसी जगहों की तादाद बढ़ रही है
जहाँ सांस लेना मेहनत का काम लगता है
ऐसे में मुझे थोड़ी सी आक्सीजन चाहिए वह कहाँ मिलेगी'[ग]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कवि समझता है कि सारी गलतियाँ मानव की ही है. मानव की प्रकृति के असीम दोहन से उपजी है. मानव ने अपने हित के लिए आवश्यकता से अधिक प्रकृति का शोषण किया है. वही प्रकृति के नष्ट होने के लिए जिम्मेदार है. साहित्यकार ओप्रकाश वाल्मिकी भी मनुष्य को ही पर्यावरण के नुकसान का दोषी मानते हुए कहते हैं कि

'वृक्षों ने ड़रकर, छोड़ दिया है उगना
नदियाँ सूखने लगी हैं
या फिर मुड़ गयी हैं, रास्ता बदलकर
तुम्हारी बस्तियों से दूर
वे जानती है, तुम कभी नहीं बदलोगे
तुम्हारी जात ही ऐसी है'[गप]

हम जानते हैं कि हम कितना भी प्रयत्न करने के बाद भी नयी प्रकृति का निर्माण नहीं कर पायेंगें. यदि यह प्रकृति एक बार नष्ट हो गई तो हमें अपनी विरासत को अपनी आने वाली नस्लों को सौंपने में असुविधा होगी. भावी पीढ़ी के लिए पर्यावरण संरक्षण और उसका संवर्द्धन कितना आवश्यक है इस बात को बताते हुए कवि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी कहते हैं कि

'इन्हें बचाओ !
इन्हें बचाओ !
कल को निकलने वाले अंकुर तुम्हें गालियाँ देंगें
कहेंगें,
कितने नपुंसक और पागल थे वे लोग
जिन्होंने हमारी सृष्टि नष्ट कर दी'[गपप]

ऐसे माहौल में भी समकालीन कवि अपनी कविता पर से विश्वास नहीं उठने देता. वह अपनी चिन्तायें अपनी कविता में उकेर कर आमजन तक पहुंचने का प्रयत्न करता है. वह जानता है कि लोगों को जागरूक करने में कविता भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है. लोगों को कविता के माध्यम से समझाना भी पर्यावरण को बचाने का एक उपाय हो सकता है. इसलिए कवि कमलजीत चौधरी अपनी कविता 'विश्वास' में लिखते हैं कि

'कवि ने कहा
बची रहे घास
एक आस–
घास ने कहा
बची रहे कविता
सब बचा रहेगा'[गपपप]

निष्कर्ष

पृथ्वी के प्राकृतिक वातावरण के क्षय होने के कारणों पर अपनी कलम चलाते हुए समकालीन कवियों ने प्रकृति के संरक्षण के पक्ष में अनेक कविताओं की रचना की है. समकालीन कवियों ने प्रकृति, पर्यावरण तथा जैव विविधता को बचाने के पक्ष में अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की है.

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ

[i]समकालीन आदिवासी कविता, संपादक हरिराम मीणा, अलख प्रकाशन, जयपुर 2013, पृष्ठ संख्या 10
[ii]विनोद कुमार शुक्ल, कथाक्रम, जनवरी–जून 2010, पृष्ठ संख्या 29
[iii]नरेश अग्रवाल सहस्त्राब्दि अंक 9 जनवरी मार्च 2003, डॉ. सत्यप्रकाश मिश्रा, पृष्ठ संख्या–8
[iv]स्नेहमयी चौधरी, चौतरफा लड़ाई, पृष्ठ संख्या–99
[v]इंटरनेशनल ई रिसर्च जर्नल,'रिसर्च जर्नी' अगस्त 2021, पृष्ठ संख्या–264
[vi]हंस, अगस्त 2011, पृष्ठ संख्या–86
[vii]बेघर सपने, निर्मला पुत्तुल, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा, पृष्ठ संख्या–81
[viii]कलम को तीर होने दो, संपादक–रमणिका गुप्ता, पृष्ठ संख्या–12
[ix]समकालीन आदिवासी कविता, संपादक हरिराम मीणा, अलख प्रकाशन, जयपुर 2013, पृष्ठ संख्या 67
[x]मगलेश डबराल, नये युग में शत्रु, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2013, पृष्ठ संख्या–12–13
[xi]प्रतिनिधि कवितायें, ओमप्रकाश वाल्मिकी, संपादक–रामचन्द्र, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, प्रसं.2012, पृष्ठ संख्या–105
[xii]शब्द और शताब्दी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृष्ठ संख्या–170
[xiii]नया ज्ञानोदय,अगस्त 2011,पृष्ठ संख्या 94